श्री:

45/885

श्री गोदा देवी का विरचित

तिरुप्पावै

(कन्याव्रत)

तॊण्डरडिप्पॊडि आऴ्वार (भक्तांघ्रिरेणु)

तिरुप्पळ्ळि ऍळुच्चि



हिंदी पद्य रूपांतरकार

श्री कू. श्री. राघवाचार्य 'अबोध मद्रासी'

श्रीः

श्री गोदा देवी का विरचित

तिरुप्पावै

(तमिल)

(कन्याव्रत)

हिंदी पद्यरूपांतरण रचयिता :

"अबोध मद्रासी"

॥ श्री कू. श्री. राघवाचार्य ॥

|| तिरुमलै तिरुपति देवस्थानम्
की ओर से प्राप्त अनुदान से यह मुद्रित है ||

प्रतियाँ निम्नांकित पते पर प्राप्त हैं :

श्री. कृ. श्री. राघवाचार्य,
३, दशावतार सन्निधि वीथी,
श्रीरंगम - ६२० ००६.

दाम : रु. ३०.००

मुद्रक : एंबार ग्राफ़िक्स
''नीणिला मुट्रम'',
२७/६, १ वीथी,
विवेकानन्दपुरं,
वेस्ट मांबलम्,
चेन्नै - ६०० ०३३

श्रीः

श्रीमत्पौंडरीकपुरम् श्रीमदांडवन् आश्रम,
४३ ए / १३, आश्रमम् रोड,
श्रीरंगम - ६२० ००६, तमिलनाडु ॥

श्रीमत्परमहंसेत्यादि बिरुदों से विभूषित
श्रीपौंडरीकपुरम् श्रीमदांडवन श्री श्री
श्रीगोपालदेशिक महादेशिक स्वामि पादों का

मंगलाशासन

तमिल भक्ति साहित्य में श्रीसंत आळ्वारों की कृतियों का स्थान उच्च कोटि का है। इनमें श्री गोदा देवी तथा श्रीतॉण्डरडिप्पॉडि आळ्वार की कृतियों का हिन्दी में पद्यानुवाद करके श्री कूत्तप्पाक्कम राघवाचार्य ने हिन्दी भक्ति साहित्य की जो सेवा की है, उसका हिन्दी भाषा भाषी लोग स्वागत करेंगे।

अनुवाद करना विशेष कर वैसे ही पद्यानुवाद करना सरल काम नहीं है। श्री राघवाचार्य ने अथक परिश्रम करके जो अनुवाद किया है, वह प्रशंसनीय है। एक बात यह भी है कि अनुवाद कितना ही सुन्दर क्यों न हो, जो आनन्द और स्वारस्य मूल ग्रन्थ के पाठ से होता है उतना अनुवाद से प्राप्त नहीं हो सकता। शायद इस उद्देश्य से साथ साथ मूल पद्यों का लिप्यंतरण भी दिया है।

श्री गोदा देवी की कृति 'तिरुप्पावै' के अंतिम दो पद्यों का गोष्ठी में एक कंठ हो गायन करना समस्त वैष्णव मंदिरों, मठों

तथा घरों में होता है जैसे उत्तर के मंदिरों में आरती गायन। उन दोनों पद्यों में श्री विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तों का तत्व भरा है। अनुवाद-कर्ता ने इसको भली भान्ति जानने से उनतीसवें पद्य के अंतिम में "उन्रन्नोडुट्रोमे यावों उनक्के नामाट्चॅय्वोम् मट्रु नं कामंगळ् माट्रु" पंक्तियों का अनुवाद यों किया है:

"तेरे प्रेय रहें सदा, सतत ही हो आपकी दासता, इच्छाएँ सब अन्य नाश कर दें"।

इस अनुवाद से हम भाव-विभोर हो रहे हैं।

इस प्रकार भक्ति साहित्य की अन्यान्य सूक्तियों का अनुवाद करने का सौभाग्य श्रीमन् नारायण इन्हें दें। इति श्रीमन्नारायण स्मरण पूर्वक मंगळाशासन करते हैं।

नारायण नारायण।

आज्ञानुसार,
मरुदूर रामस्वामि ऐयंगार,
श्रीकार्यम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

अनुशंसा

अनुवाद एक कला है। स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों में समान दक्षता से संपन्न व्यक्ति ही इस कार्य में सफल उतरेगा। विशेषकर स्त्रोत भाषा के पद्य का पद्यानुवाद करने में सफलता किसी किसी को ही प्राप्त होती है।

श्री आण्डाळ् (गोदा देवी) का 'तिरुप्पावै' प्रभूत भाव गर्भित परन्तु सरल तमिल में 'पावै' व्रतानुष्ठान - विवाह के निमित्त व्रतानुष्ठान - के लिए रचित कृति है जिसका गद्यानुवाद अन्यान्य भाषाओं में कइयों ने किया है। परन्तु हिन्दी में पद्यानुवाद का यह प्रथम प्रयास है। तमिल भाषी विद्वान श्री. के. एस. राघवाचार्य स्वामी ने तमिल कृति के सभी गूढार्थ एवं गंभीर भावों को हिन्दी पद्यानुवाद में पूरी सफलतापूर्वक उतारा है। छंद भी गति यति से निर्दोष रहता है।

श्री राघवाचार्य स्वामी से मेरा निकटतम परिचय पचास वर्षों का है। उनके गहरे संस्कृत-भाषा-पांडित्य एवं हिन्दी प्रवीणता से मैं विशेष रूप से अवगत हूँ। हिन्दी -

पद्य-रचना-नैपुण्य में वे किसी से कम नहीं हैं।

उनके जैसे तमिल भाषी, संस्कृत तथा हिन्दी भाषाओं में प्रवीण पंडितों द्वारा तमिल के वैष्णव ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी भाषी लोगों के लिए तमिल के धार्मिक ग्रन्थों की संपत्ति को हिन्दी में भाषान्तरित कर प्रदान किया जाना नितांत आवश्यक है जिससे हिन्दी भाषी लोग तमिल भाषा के महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान संपादन कर सकें।

वेदविद् श्री राघवाचार्य स्वामी श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के नित्यानुष्ठान एवं धर्माचरण में लगे रहनेवाले मनीषि हैं जो 'तिरुप्पावै' मूल ग्रन्थ में निहित सभी गूढार्थ, लक्ष्यार्थ तथा ध्वन्यर्थ को अपने अनुवाद में लाने में समर्थ हुए हैं। अनुवाद की भाषा तत्सम बाहुल्य से क्लिष्ट नहीं पर गंभीर बनी है।

'नप्पिन्नै' के सम्बन्ध में उनका अनुसंधानात्मक विचार अनुसरणीय एवं श्लाघनीय है।

विद्वान श्री राघवाचार्य स्वामी के 'तिरुप्पावै' का यह पद्यान्तरण लिप्यन्तरीकरण सहित प्रशंसनीय प्रयास है। वैसे

श्री गोदा देवी का 'नाच्चियार तिरुमोऴि' तथा अन्य आऴ्वारों की माधुरी उपासना के पद्यों का अनुवाद करें तो मधुरोपासना का अनुसंधान करने वालों के लिए वह लाभप्रद एवं सहायक सिद्ध होगा।

हिन्दी भाषी ही नहीं, वरन् हिन्दी जानकार तमिल और अन्य भाषा-भाषी भी इससे लाभान्वित होंगे, यह मेरी धारणा है। यह ग्रन्थ सभी संग्रहालयों में तथा धार्मिक विचारों से संपन्न लोगों के घरों में भी संग्रहणीय है।

श्री रंगनाथजी से मेरी प्रार्थना है कि वे श्री राघवाचार्य को स्वस्थ जीवन तथा चिरायु प्रदान करें ताकि वे आगे भी इस प्रकार की स्तुत्य सेवा करते रहें।

रा. वेंकटकृष्णन
मद्रास - ३३

सेवा निवृत्त हिन्दी प्रोफेसर,
द्वा.गो. वैष्णव कालेज,
मद्रास - १०६
१०४, को. रा. कोविल् स्ट्रीट,
मद्रास - ६०० ०३३

श्रीः

नम्र निवेदन

तिरुप्पावै तथा तिरुप्पळ्ळियेळुच्चि श्रीवैष्णव संप्रदाय के लिए अनिवार्य ग्रन्थ हैं। श्रीवैष्णव समाज के किसी भी व्यक्ति को अपने गुरु तथा आऴ्वार आदि के जन्म-नक्षत्र-समारोह पर आरंभ में इन दोनों ग्रन्थों का पारायण करके ही अन्य आवश्यक आऴ्वारों की श्रीसूक्तियों का पारायण करना पड़ता है।

ऐसे अत्यावश्यक ग्रंथों का हिन्दी में पद्यान्तरण करने का सौभाग्य भगवान एवं आचार्यों की कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है। इसके लिए केवल कृतज्ञता विष्करण के सिवा कुछ करने की शक्ति मुझ में नहीं। परन्तु इसके अलावा और कुछ व्यक्ति विशेषों को धन्यवाद समर्पण न करूँ तो मुझ जैसा अनागरिक कोई नहीं होगा।

सर्वप्रथम मेरे आचार्य पीढाधिपति श्रीमद्वेदमार्गेत्यादि नाना बिरुदों से भूषित श्री लक्ष्मी नृसिंह पादुका सेवक श्रीवण् शठकोप श्री नारायण यतीन्द्र महादेशिक के पद

कमलों में अनन्त प्रणाम सहित अपनी कृतज्ञता समर्पित कर रहा हूँ।

इसी प्रकार श्रीमत् पौंडरीकपुरं आण्डवन् आश्रम में विराजमान श्रीमद्वेदमार्गेत्यादि बिरुद भूषित श्री गोपाल देशिक के चरण कमलों में मेरा सप्रणाम धन्यवाद समर्पित है।

मैं चातक की भांति श्री रंगम श्रीमदाण्डवन् आश्रम के स्थानाधीश श्रीमद्वेदमार्गेत्यादि बिरुदों से भूषित श्री रंग रामानुज महादेशिकजी की ओर से प्रशस्ति पत्र की आकांक्षा करता रहा। न जाने क्यों अभी तक वह हस्तगत नहीं हुआ। यह मेरा दुर्भाग्य है। फिर भी पद्यान्तरण के समय में बार बार परामर्श देकर उन्होंने मुझे अनुग्रहीत किया है। विशेषकर भगवान की प्रिय नायिका 'सत्या' का उद्‌बोधन उन्हीं से हुआ है। अतः उनके चरण नलिनों में कृतज्ञता सहित अनन्त प्रणाम अर्पित है।

श्रीमान मद्रास के न्यायाधीश श्री उ.वे.एम. श्रीनिवासनजी भी मेरी कृतज्ञता के पात्र हैं जिन्होंने बड़े आदर के साथ मेरी प्रार्थना स्वीकृत करके अंग्रेजी एवं हिन्दी में प्रशस्ति पत्र देकर मुझे उपकृत किया है।

अनन्तर मेरे मित्रवर डॉ. रा. वेंकटकृष्णनजी, जो मेरे बाल्य काल से मैत्री निभाते रहते हैं, के बारे में मैं किन शब्दों में धन्यवाद प्रकट करूँ, समझ में नहीं आ रहा है; क्योंकि उन्होंने इन पद्यों का मुद्रण कार्य, अथक परिश्रम करके सफलता के साथ संभाला और इस कार्य में आवश्यक 'प्रूफ़' शोधन आदि अन्यान्य सहायताएँ दी हैं। मुझसे वय में ज़रा छोटे होने के नाते मैं उनको आशीर्वाद देते हुए भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे उनको चिरायुता, अरोगता, मानसिक स्वास्थ्य आदि प्रदान करें।

इन सबके होते हुए भी इसके मुद्रण में मेरी व्याकुलता को दूर करनेवाले मद्रास के 'एम्बार ग्राफ़िक्स' के निर्वाहक चि. एंबार. कस्तूरि सर्वप्रकार के मेरे धन्यवाद के पात्र हैं जिनकी सहायता के बिना यह पुस्तक इतने सुचारु रूप से इतनी शीघ्रता से सम्पन्न नहीं हो सकता।

इस पद्यान्तरण में पाण्डुलिपि इत्यादि की तैयारी में मुझे साथ देनेवाले अन्यान्य सहृदयों को धन्यवाद समर्पित करता हूँ।

के. श्री. राघवाचार्य

श्री मद्वेदमार्ग प्रतिष्ठापनाचार्य, परमहंसपरिव्राजकाचार्य, श्रीभगवद्रामानुज सिद्धांत निर्धारण सार्वभौम, श्री लक्ष्मीनृसिंह दिव्य पादुकासेवक श्री नारायण यतींद्र महादेशिक - कृपा संदेश - अभिनंदन पत्र

श्रीः





Sri Ahobila Mutt ,
Camp : Mumbai 400 071.

श्री उ.वे. कूत्तप्पाक्कम् राघवाचार्यः
संस्कृत, हिन्दी, विद्वान्, श्रीरङ्गम् ।

18.05.96

॥ श्रीमते श्रीलक्ष्मीनृसिंह परब्रह्मणे नमः ॥
॥ श्रीमते श्रीवणशठकोप श्रीवेदान्तदेशिक यतीन्द्र महादेशिकाय नमः ॥

॥ आशासन पत्रिका ॥

श्रीगोदादेव्यगायत् श्रुतिमधुरगिराबोधयत्कृष्णमेवं
भक्तांघ्रेरेणुसूरि : प्रतिदिनमुषसि श्रीपतिंनैजपद्यैः ।
आचार्या अस्मदीयाः स्वयमति कृपया भावमेषां व्यवृण्वन्
द्रामिड्या संस्कृतञ्च प्रणय मधुरया योजयन्तः प्रसिद्धाः ॥१॥

मणिप्रवाळ भाषया कदम्ब दम्भ निर्ग्रतः
बहून् रहस्य बोधकान् गुरूत्तमैः प्रसादि(धि)तान् ।
समग्रभारतस्थिता यथावगन्तुमीशते
तथाऽऽङ्गल हिन्दि भाषयोपपादनं समीहितम् ॥ २ ॥

वेदाध्यायी त्रिभाषा विपुलरसघन ज्ञानवान् राघवार्यः
हिन्दीग्रन्थात्मनै तौ व्यधित रसमयीं वृतिमाश्रित्य रम्याम् ।
गोदा गीताश्चगाथाः प्रतिदिनमुषसि श्रद्धया सर्वभक्ताः
गायन्तो रङ्गराज प्रसृमर कृपयाऽभीप्सितान्प्राप्नुवीरन् ॥ ३

भावुकाः

अस्मदीय पूर्वाचार्यैः बहुभिः सारघनैः व्याख्यानैः विभूषितां श्रीगोदादेव्याः तिरुप्पावै गाथां, तथैव श्रीभक्तांघ्रिरेणु सूरेः 'तिरुप्पळ्ळियेळुच्चि' गाथां च सर्वेषां भारतीयानां सानन्दमनुसन्धानाय सव्याख्यैः सरळैः हिन्दीमयैः पद्यैः अनूदितवानेषः अस्मदभिमान भाजनं विबुधः कूत्तप्पाक्कं श्री राघवाचार्यः।

संस्कृते द्रामिड्यां उर्दू हिन्दी भाषयोश्च प्रवीणोयं अनेन कवितामयानुवादेन श्रीमत्या गोदादेव्याः भक्तांघ्रिरेणुसूरेश्च प्रसादस्य परमं पात्रं भवति। एवमेवाचिरात् विबुध एषः अन्याश्च द्रामिडमयीः दिव्यसूरि सूक्तीः सरळया एतादृश्या कवितया सव्याख्यमनुवदन् भारतीयैः हिन्दी भाषाप्रेमिभिः अभिनन्दनीयो भूयात्। आशास्महे सकुटुम्बायास्मै नः प्रेमभाजनाय विदुषे श्रीमालोलः सततं सर्वाणि श्रेयांसि चानुगृह्णीयादिति॥

श्री शठकोप श्रीः
H. H. THE JEER OF
SRI AHOBILA MUTT.

Justice Sri M. Srinivasan

High Court,
Madras,
1.2.1996



Foreword

The word Thiruppavai comprises two components Thiru+Pavai. 'Thiru' has several meanings : Sacred; Affluence; Eminence; Beauty.

'Pavai' means Vow or Women. Thiruppavai consists of thirty songs sung by Sri Andal. Each song ends with the word 'Pavai'. Sri Andal is one of the twelve Alwars, her father being one among them known as Periyalwar. According to her biography, she married the Supreme Being Himself in the form of Lord Ranganatha of Srirangam.

Thiruppavai is the quintessence of the Upanishads. It contains several moral, philosophic and divine truths with respect to the three verities (tatvas) Chit(human soul), Achit(matter) and Iswara(Supreme Being) and their

mutual relationship. The immortal work is an esoteric exposition in simple and sweet language.

Thiruppavai has been translated already by others in English in prose form. But this book presents a translation in poetry form. To my little knowledge, no one else has so far attempted it.

Translation is a very difficult art. It requires more proficiency in the two relevant languages than mere knowledge. The translator must also know fully about the allusions in the original, the background, context and circumstances in which the original work was created. In short, the translator must sit in the 'arm chair' of the author of the original work and visualise all that passed in the mind of that person.

Vidwan Sri K.S.Raghavacharyar has done full justice to his desire to bring out a translation in poem form. The ideas inlaid in each stanza in the original work are brought in to the translation. For example, in the thirteenth stanza the original uses the expression 'Polla arakkanai killikalaindanai'

[பொல்லா அரக்கனைக் கிள்ளிக் களைந்தானை]

The learned author of this book has translated it as

**'Durvrtta lankesh ke seershom ko katva
Diya visikh se Satyavratee Ram'**

(दुर्वृत्त लंकेश के शीर्षों को कटवा दिया विशिख से सत्यव्रती राम).

Thus he refers to Ravana whose heads were removed by Sri Rama.

The purpose of this book is quite evident and also set out in the preface by the author himself. People in the Northern part of this country are familiar with Meera Bhajans. They will appreciate and enjoy the beauty of Thiruppavai authored by the Divine Lady of Srivilliputtur by reading this book.

This book reveals not only the mastery of the author over the two languages Tamil and Hindi but also his great devotion to the Lord and deep knowledge of ancient scriptures. I pray to Lord Ranganatha and Sri Goda Devi to shower on him their choicest Blessings and give him long life with sturdy health so that he can translate all the Prabandams of the Alwars.

॥ शुभं भवतु ॥

M. Srinivasan

एम. श्रीनिवासन,
न्यायाधीश,
उच्च न्यायलय,
मद्रास.



<u>*प्रस्तावना*</u>

शब्द 'तिरुप्पावै' में दो भाग होते हैं। तिरु के अनेक अर्थ होते हैं- पवित्रता, धन की समृद्धि, प्रतिष्ठा और सुंदरता। 'पावै' का अर्थ प्रतिज्ञा या महिला है। तिरुप्पावै में तीस गीत श्री आण्डाल ने गाये हैं। हर एक गीत 'पावाय्' शब्द से समाप्त होता है। श्री आण्डाल तो बारह आलवारों में एक थीं। उनके पिता पेरिय आलवार के नाम से जाने जाते हैं। उनके जीवन वृत्तान्त के अनुसार उन्होंने श्रीरंगम श्रीरंगनाथजी के रूप में हुए साक्षात परमात्मा से शादी की।

तिरुप्पावै सर्व उपनिषदों का सार है। उसमें कितने ही नैतिक, दार्शनिक और दैविक सत्य समाये हुए हैं जैसे तीन तत्व चित(मनुष्य की आत्मा), अचित(जड़ पदार्थ) और ईश्वर(परमात्मा) और उनका परस्पर संबन्ध। यह अमर काव्य सरल और मधुर भाषा में अतीव गूढ तत्वार्थ का प्रकाशन है।

तिरुप्पावै ग्रन्थ का कितने लोगों ने अंग्रजी और हिन्दी भाषा में गद्य रूप में अनुवाद किया है। मगर इस पुस्तक का अब कविता के रूप में राघवाचार्य ने अनुवाद किया है। मेरे छोटे ज्ञान में किसी ने अब तक यह प्रयत्न नहीं किया है।

तर्जुमा करना बहुत कठिनाई की कला है। उसमें दो प्रस्तुत भाषाओं के ऊपर प्रवीणता होना जरूरी है। अनुवाद करनेवालों को मूलप्रबन्ध का प्रधान संस्थान, संदर्भ और प्रकरण सब बातों को ख्याल में रखना पड़ता है। संक्षेप में अनुवादक मूल लेखक को बाहुधारी आराम कुर्सी पर बैठना पड़ता है और अपने मन में देखना पड़ता है जो मूल लेखक अपने मन में सोचते थे।

विद्वान श्री के. एस. राघवाचारी ने पद्य रूप में तर्जुमा करके अपनी इच्छा का पूरा न्याय किया है। मूल प्रबन्ध के हरेक छंद के विचार को अनुवाद किया है। उदाहरण के लिए मूल लेख में तेरहवें पद्य में यह बात उपयोगित है कि 'पोल्लावरक्कनै किळ्ळिक्कळैन्दानै'। विद्वान लेखक ने इस तरह उनका तर्जुमा किया है: "दुर्वृत्त लंकेश के शीर्षों को कटवा दिया विशिख से सत्यव्रती राम ने"। इस तरह उन्होंने वर्णन किया कि श्रीराम ने रावण के

शीर्षों का छेदन किया।

इस पुस्तक का उद्देश्य पूर्ण रूप से प्रकट होता है जो लेखक ने अपनी भूमिका में लिखा है। उत्तर भारत के लोग मीरा के भजन से बहुत परिचित हैं। वे लोग इस पुस्तक को पढ़कर तिरुप्पावै की सुन्दरता की प्रशंसा करेंगे और आनन्द लेंगे जिनकी मूल लेखिका श्रीविल्लिपुत्तूर की दैविक महिला ने की थी।

यह पुस्तक सिर्फ लेखक की दो भाषा तमिल और हिन्दी में निपुणता ही नहीं बताती पर उनकी ईश्वर पर महान भक्ति और प्राचीन शास्त्रों में उनका गहरा ज्ञान का भी प्रकाशन करती है। मैं भगवान श्रीरंगनाथ और श्रीगोदादेवी से प्रार्थना करता हूँ कि लेखक को उत्तम आशीर्वाद दें और उनको दृढ़गात्रता सहित दीर्घायू दे दें जिससे लेखक आळ्वारों के पूरे प्रबन्धों का तर्जुमा कर सकें।।

॥"शुभं भवतु"॥

एम. श्रीनिवासन

प्रस्तावना

भारत का भक्ति साहित्य एक गंभीर निधि है। इस देश की विविध भाषाओं में यत्र-तत्र अत्यद्भुत इस विषय की कविताएँ .कथाएँ आदि परिदृश्यमान हैं ।

यद्यपि कहा जाता है 'भक्ति द्राविड़ उपजि, लाये रामानंद,' फिर भी प्रत्येक भाषा में ये भक्ति साहित्य दृष्टिगोचर होते हैं । इनमें तमिल का भक्ति साहित्य अर्वाचीन भाषाओं में सबका मूलस्रोत बना है तथा अतीव प्राचीनतम भी है ।

ऐसे तमिल के भक्ति साहित्य में विष्णु भक्ति में अनन्य भाव से लीन होने से ही 'आऴ्वार' (तल्लीन) कहे जानेवाले भक्त शिरोमणियों की कृतियाँ भक्ति और वेदांत विषय की उत्तमकोटि की मानी जाती हैं ।

ये आळवार कुल दस हुए हैं, यद्यपि आम लोगों में बारह (१२) आळवार प्रसिद्ध हैं । इनमें

एक 'मधुरकवि' नामवाले भक्ति साहित्य में भी सबसे एक कदम आगे बढ़कर देव-भक्ति को छोड आचार्य भक्ति को ही परम उद्देश्य मानकर केवल आचार्य के बारे में ग्यारह पद गा चुके हैं । इसलिए भक्ति साहित्य में यह अलग माना जाता है । बाकी ग्यारह में दस पुरुष और एक स्त्री भक्त कवयित्री होती हैं । इनमें स्त्री भक्त कवयित्री के बारे में बाद में विचारेंगे ।

इन दस पुरुष भक्त कवियों में छः व्यक्ति रक्ष्य एवं रक्षक में जो घनिष्ठ संबंध है, इसको प्रधानता देते हुए रक्षक के प्रति रक्ष्य की सहज कृतज्ञता रूपी प्रेम को "भक्ति" मानकर पद गा चुके हैं ।

दो आऴवार ऊपर निर्दिष्ट भक्ति को मानते ही हैं । साथ ही साथ माता के पुत्र के प्रति होनेवाले वात्सल्य भाव को भी भक्ति मान चुके हैं । इन में 'पेरियाऴवार' (विष्णुचित्त) कृष्ण के जन्म से लेकर ब्रज में हुई लीलाओं के बारे में स्वयं माता बनकर अनुभव करते हैं । वात्सल्य रस का सूत्रपात करने

वाले ये ही पहले कवि हो चुके हैं । कुलशेखर आऴ्वार 'चेर' (केरल) देश के राजा थे । ये मातृवात्सल्य के विप्रलंभ वात्सल्य को गा चुके हैं ।

अंतिम दो आऴ्वार नम्माऴ्वार (शठकोप) और तिरुमंगैमन्नन (कलियन) पति-पत्नी के बीच के या प्रेमी व प्रेमिका के बीच के गाढतम प्रणय भाव को माधुरी भक्ति मानकर गा चुके हैं ।

ये चारों (पेरियाऴ्वार, कुलशेखर आऴ्वार, नम्माऴ्वार, तिरुमंगैयाऴ्वार) अपने ऊपर स्त्रीत्व का आरोप करके अपने को प्रेमिका या माता एवं भगवान को प्रेमी या पुत्र के रूप में रखते हुए मिलन और विरह के गीत गा चुके हैं ।

श्री गोदा देवीजी इनसे भी (पेरियाऴ्वार, कुलशेखर आऴ्वार, नम्माऴ्वार तथा कलियन) परे मानी जाती हैं क्योंकि उपर्युक्त चारों में स्त्रीत्व आरोपित है तो श्री गोदा देवी में स्वाभाविक है । अलावा इसके इनकी भक्ति साधना का फल, इसी

मानव लोक में भक्त समाजों के देखते, श्रीरंगम के रंगनाथ भगवान के साथ इनका विवाह संपन्न हुआ और ये देवालय के गर्भगृह में पहुँचकर भगवान के साथ एक होकर अदृश्य हो गयीं । अतएव इनको और आचार्य-भक्ति को प्रधानता देनेवाले मधुरकवि को छोडकर दस आळवार माने जाते हैं ।

अपने ऊपर मातृत्व का आरोप करके वात्सल्य रस के भक्ति गीत के रचयिता पॅरियाऴवार (विष्णुचित्त) की ये गोदादेवी पालिता पुत्री थीं ।

ऐतिह्य है श्री विष्णुचित्त के तुलसी वन में यह अयोनिजा स्त्री शिशु के रूप में पडी मिलीं। इसी कारण इसका नाम विष्णुचित्त ने 'गोदा' (भूमि की दी हुई) रखा । अपने पिता से भक्ति की घुट्टी पीकर पलने से ही ये स्वभाव से ही भक्तिन हो गयीं । पिताजी वटपत्रशायी भगवान के लिए मालाएँ बनाकर प्रतिदिन अर्पित किया करते थे । होते-होते गोदाजी भी माला गूंथने में सहायता देने लगीं ।

एक दिन अकस्मात इनके मन में इच्छा हुई कि क्यों न देखूँ इन मालाओं को पहनकर श्री मालाधारी भगवान के योग्य मैं हूँ कि नहीं । तुरंत उन्होंने मालाएँ पहन लीं । आइने में अपना रूप देखने से इनको आत्मतृप्ति होने लगी । फिर मालाओं को उतार ज्यों का त्यों टोकरे में रख दिया । यह अनुचित कार्य प्रतिदिन होने लगा । एक दिन ये मालाधारिणी हो आइने के सामने खडी थीं कि अकस्मात विष्णुचित्त उपस्थित हो गये । उन्होंने मालाओं को अशुद्ध समझा तो फिर से दूसरी मालाएँ बनाकर भगवान को अर्पित कर दीं । लेकिन भगवान ने उन्हें आदेश दिया कि गोदा की पहनी हुई मालाएँ ही मुझे अच्छी लगती हैं उन्हीं को ला दो। इस घटना के बाद गोदाजी लोगों में "शूडिक्कॉडुत्त नाच्चियार" (अपनी पहनी माला भगवान को अर्पित करनेवाली देवी) के नाम से प्रसिद्ध हो गयीं ।

युवावस्था में पहुँचते गोदाजी ने स्पष्ट कह दिया कि मैं भगवान से ही अपना विवाह करूँगी । बचपन से ही इसके प्रभाव से परिचित विष्णुचित्त ने भी मान लिया था और आवश्यक प्रयत्न किया ।

श्रीरंगम के भगवान रंगनाथजी के साथ गोदाजी का विवाह आम लोगों के समक्ष धूमधाम से संपन्न हुआ। इसके तुरंत पश्चात् गोदादेवीजी भगवान के साथ देवालय के गर्भगृह में प्रवेश करके वहीं अंतर्धान हो गयीं ।

यह प्रस्तुत कन्याव्रत का गीत श्री गोदादेवी जी का विरचित है । भगवान के समक्ष अपने परमोद्देश्य की पूर्ति की प्रार्थना करने के रूप में ये पद गाये गये हैं । हमारे देश में जिन कन्याओं का विवाह संपन्न हो नहीं पाया है वे कन्याएँ इस प्रकार के व्रत का अनुष्ठान करती हैं तथा सफल हो जाती हैं । इस व्रत का नाम तमिल में "पावैनोन्बु" (कन्याव्रत) कहा जाता है और इसके लिए आराध्य देवता कात्यायनी और मनमथ हैं । लेकिन श्री गोदादेवीजी इस व्रत के आचरण में भी अपने अनन्यत्व का परिचय स्पष्ट दे चुकी हैं । उन्होंने मनमथ से भी मनमथ श्रीकृष्ण भगवान को अपना आराध्य देव मानकर गोपिकाओं के साथ इस कन्याव्रत के आचरण की कलपना करते हुए पद गाये हैं । इस

में और एक विशेषता है "मासानां मार्गशीर्षोस्मि" गीतोक्ति के आधार पर इस कन्याव्रत को मार्गशीर्ष मास में करने की कल्पना की गयी हैं । अंत में इस गीतिका के उनतीसवें पद में इस अनन्यत्व को उन्होंने स्पष्ट कहा है ।

इसमें अब एक प्रश्न उठता है कि आळवारों की सूक्ति में कृष्ण की प्रेमिका "नप्पिन्नै" की चर्चा आती है । असल में है यह कौन ? इसी प्रकार उत्तर भारत के भक्त-समाज में संतत चर्चित "राधा" भी कौन ? इन दोनों के बारे में श्रीमत् भागवत महापुराण में कहीं कोई चर्चा दीखती नहीं । इस संबंध में भागवत के दशम स्कंध के ५८ वें अधयाय के ३२ से ४७ तक के श्लोकों से कथित "सत्या' नामक श्री कृष्ण की राजमहिषी की चर्चा से विदित होता है कि श्री कृष्ण की वल्लभाएँ बहुत थीं । परंतु रानियाँ आठ थीं जिनमें सत्या अंतिम थीं । तमिल में "बाद" (पश्चात्) का वाचक "पिन" शब्द है । रानियों में बाद में अंतिम विवाहिता सत्या है । दोनों ने परस्पर प्रेम-वशीभूत होकर परिणय कर लिया ।

इस अर्थ को घोषित करता है यह (नम्+पिन्नै) 'नप्पिन्नै' शब्द । इसके अतिरिक्त आळवारों ने नप्पिन्नै के सात अदम्य बैलों का दमन करके ही श्री कृष्ण के साथ के विवाह की चर्चा की है । यह चर्चा भी वही सत्या के विवाह के प्रसंग में ही आती है । इसी प्रकार उत्तर भारत के "राधा" शब्द के बारे में भी मेरा विचार है कि "राधृ साधृ संसिद्धौ" धातु के आधार पर राधा का प्रेम-वशीकृता और प्रेम-वशीभूता दोनों अर्थ के लग सकने के कारण राधा भी यही सत्या होगी।

अतः इस भाषांतरण में "नप्पिन्नै" शब्द के प्रति सत्या शब्द प्रयुक्त किया है ।

अब प्रसंगवश मुझे श्री "तॉण्डरडिप्पोडि" (भक्तों का चरण रज) आळवार और उनकी कृति के बारे में कहना पड़ गया है ।

हम मानवों का एक वर्ष देवों के लिए एक दिन होता है । मकर संक्रांति (सूर्य का मकर राशि

में प्रवेश) से छः महीने उत्तरायण कहाता जो देवों के लिए दिन तथा कर्कट संक्रांति (सूर्य का कर्कट राशि में प्रवेश) से छः महीने दक्षिणायन कहा जाता जो देवों के लिए रात्रि मानी जाती है । इन में दक्षिणायन का अंतिम मास चाप होता है । अगला मास मकर देवों के लिए प्रातःकाल के समान है । अतएव चाप (धनु-मार्गशीर्ष) उषःकाल के समान है । इसलिए सबी देवी देवताओं के मंदिरों में इस मास में उषःकालिक पूजा की जा रही है ।

राजा लोगों के महलों में उनके जागृत होते समय उनकी वीर साहसिक गाथाओं का गायन चारण लोग किया करते थे । इसी संप्रदाय के आधार पर श्री विष्णु-मंदिरों में चाप मास के उषःकाल में श्री भक्तांघ्रिरेणु (तॉण्डरडिप्पोडि) आळवार की कृति "प्राबोधिकीस्तुति" तथा श्री गोदादेवीजी का रचित "तिरुप्पावै" का गायन (अनुसंधान) किया जाता और तत्पश्चात् भोग लगाया जाता है।

इसी कारण से मैंने उपर्युक्त दोनों सूक्तियों का

हिंदी में पद्यरूपांतरण करके एक ही पुस्तक के रूप में छपवाया है ।

श्री तॉण्डरडिप्पॉडि (भक्तांघ्रिरेणु) आळ्वार का जन्म चोल राज्य के "मंडङ्गुडि" नामक गाँव में हुआ था । ये ब्राह्मण कुल के लिए नियत कार्यों का अनुष्ठान करने में विशेष रत होते थे। अतः इनके नाम के साथ "विप्र" शब्द को मिलाकर "विप्रनारायण" कहलाते थे । श्रीरंगम के श्री रंगनाथ भगवान के प्रति इनकी बडी आस्था थी । ये श्रीरंगम में एक पुष्पवाटिका लगाकर प्रतिदिन भगवान को तुलसी और पुष्पमालाएँ समर्पित करते थे । उन्होंने "तिरुमालै" एवं "तिरुपळ्ळिएळुच्चि" नामक दो कृतियों रची हैं ।

इस पद्य का हिन्दी में रूपांतरण अपनी अल्प मति को लेकर करने का दुस्साहस मैंने इसलिए किया कि जैसे टूटी-फूटी वाणी में ही सही वृत्तांत को कहते हुए अपने बच्चे के प्रति बडे लोग उल्लास ही प्राप्त करते हैं न कि क्रोध । अतः हिन्दी के साहित्यक ज्ञानियों की सेवा में तथा हिन्दी के भक्तिमान समाज के सामने यह प्रस्तुत करते

हुए यह आशा करता हूँ कि उनको इन गीतों में व्यक्त भक्ति-तत्व का परिचय हो जाएगा और इसीसे अपने को कृतकृत्य मानूँगा ।

विशेष सूचना :

तमिल भाषा के पदों को मैंने नागरी लिपि में लिप्यंतरित भी कर दिया । ऐसा करते समय तमिल की विशिषट उच्चारण रूप ह्रस्व 'ए' तथा ह्रस्व 'ओ' कार के लिए चँद्रकला ' ॅ ' एवं ' ॅ ' का प्रयोग लिया गया और जो उच्चारण तमिल एवं केरल की लिपियों को छोड इतर भारतीय भाषाओं में नहीं पाया जाता उसके लिए ' ऴ ' कार के नीचे बिंदु लगाकर लिखा गया है ।

श्रीरंगम

कू.श्री.राघवाचार्य

(१) आया है अब मार्गशीर्ष महिना चँदा कला से भरा
कन्याओ यमुना नदी अब चलें कन्याव्रत-स्नान को
संपन्न व्रज-वासि, रूप गुण. से संपन्न, आओ यहाँ
भाला-धारि कठोर नंद, उनकी रानी यशोदा प्रिया,
दोनों का प्रिय पुत्र सिंह-शिशु-सा अंभोद-सा साँवला
आदित्य-द्युति, चँद्र-सौम्य मुखडेवाला, सरोजाक्ष है
श्रीनारायण ही हमें वितरता काम्यार्थ को सर्वदा
मान्या हों इस स्नान से जगत में कन्याव्रती का
कथन ॥

मार्गळित्तिंगल् मदिनिरैंद नन्नाळाल्
नीराडप्पोदुवीर पोदुमिनो नेरिळैयीर्
शीर्मल्गु माय्प्पाडिच् चॅल्वच्चिरुमीर्गाळ्
कूर्वेल् कॉडुंदॉळिलन् नंदगोपन् कुमरन्
एरार्न्दकण्णि यशोदै इळंजिंगम्
कार्मेनिच्चॅंगण् कदिर्मदियं पोल्मुहत्तान्
नारायणने नमक्के परै तरुवान्
पारोर् पुगऴ प्पडिन्देलो रॅम्पावाय् ॥

(२) पृथ्वी - प्रांगणवासियो हम कहें कन्याव्रती जो वही
क्या आचार किया करे इस महीने में, सुनो ध्यान से
क्षीराब्धी पर सो रहे परम की गावें पदाब्ज-स्तुति,
प्रातः स्नान करें, न सेवन करें घी दूध इत्यादिका,
आँखों काजल ना धरें, सुमन से चूडा-अलंकार ना,
ना हो वर्जित कार्य सर्व, चुगली जाके न खावें कभी,
भिक्षा-दान दरिद्र , पंगु जन को, पूजा करें संत की,
ऐसे ही व्रत पार हो मुदित हों कन्याव्रती का
कथन ॥

वैयत्तु वाऴ्वीर्गाळ् नामुं नम्पावैक्कु
चॅय्युम् किरिशैकल् केळीरो पार्कडलुळ्
पय्यत्तुयिन्र परमनडि पाडि
नॅय्युण्णोम् पालुण्णोम् नाट्काले नीराडि
मैयिट्टॅऴुदोम् मलरिट्टु नाम् मुडियोम्
शॅय्यादन शॅय्योम् तीक्कुरळैच्चॅन्रोदोम्
ऐय्यमुम् पिच्चैयु मांदनैयुम् कैकाट्टि
उय्युमारॅण्णि उहन्देलो रॅम्पावाय् ॥

(३) ऊँचे हो जग नापते परम की नामावली गा सदा
यों कन्याव्रत को करें यदि नदी-स्नानादि से पूर्ण तो
सारा भारत ताप - हीन, बरसे वर्षा-त्रयी मास में,
मत्स्यों के गण धान की लहलहाती क्यारियों में तिरे
भौंरे हों सुख सो रहे कुवलयों के सून में प्रीति से
गोष्ठों में थन को दुहें पकड़ के तो दूध सेरों दुही
गायें पीन पयोधरी बहु रहें औदार्य सौशील्य की
स्थायी संपत पूर्ण हो सतत ही कन्याव्रती का
कथन ॥

ओंगियुलहळंद उत्तमन् पेरपाडि
नाङ्गळ् नम्पावैकु च्चाट्रि नीराडिनाल्
तींगिन्नि नाडॅल्लाम् तिङ्गळ् मुम्मारि पॅय्दु
ओंगु पॅरुंचॅन्नलूडु कयलुहळ
पूंगुवळैपोदिर् पॉरिवण्डु कण् पडुप्प
तेंगादे पुक्किरुंदु शीर्त्तमुलै पट्रि
वांग क्कुडम् निरैक्कुम् वळ्ळल् पॅरुपशुक्कळ्
नींगाद शॅल्वं निरैन्देलो रॅम्पावाय् ॥

(४) वर्षा-दैवत रूप कान्ह ! हमको बोलें कभी ना नहीं
गोता अंबुधि में लगा, सलिल से आपूर, गर्जंत हो,
श्री नारायण - सा सुनील वपु ले, आकाश - आरूढ हो
कंधे पर्वत - से बलिष्ठ जिसके श्री पद्मनाभ प्रभू
के हस्तांबुज में लसी चमकती सौदर्शिनी तेज सी,
श्रीकांतायुध पाँचजन्य-रव-सा निर्घोष देते हुए,
शार्ङ्गी के शर-वर्ष-सी बरस दे वर्षा मनोहारिणी,
व्रत्यस्नान सुखी करें हम कृती कन्याव्रती का कथन ॥

आऴिमऴैक् कण्णा ऑन्नु नी कै करवेल्
आऴियुळ् पुक्कु मुहंदुकॉडार् तेरि
ऊऴिमुदल्वन् उरुवंपोल् मॅयकरुत्तु
पाऴियं तोळुडैप् पर्पनाबन् कैयिल्
आऴिपोल् मिन्नि वलंपुरिपोल् निन्रदिर्न्दु
ताऴादे शाङ्र्ग मुदैत्त शरमऴै पोल्
वाऴ उलकिनिल् पॅय्दिडाय् नाङ्गळुम्
मार्गऴि नीराड महिऴ्न्देलो रॅम्पावाय् ॥

(५) मायी उत्तर दिश्य पुण्य मथुरा-के लोक–प्यारा तनूज
शुद्ध स्वादु पवित्र नीर यमुना के तीर केलि-प्रिय
कालिंदी–तट–वासि गोपकुल को दीया महारत्न का
माँ की कुक्षि सुपूजनीय करता दामोदर स्वामि–को
आके पूत समोद अर्चन् करें पुष्पौघ से, स्तोत्र भी
गावें गद्‌गद् भाव से, स्मरण भी ऐकाग्र्य के साथ हो
तो पूर्वाघ भविष्य के दुरित का बोरा हमारा तुरंत
ज्वाला में पडते कपास सम हो कन्याव्रती का
कथन ॥

मायनै मन्नु वड मदुरै मैंदनै
तूय पॅरुनीर् यमुनैत्तुरैवनै
आयर् कुलत्तिनिल् तोन्रुं मणिविळक्कै
तायैक् कुडल् विळक्कं शॅय्द दामोदरनै
तूयोमाय् वंदु नाम् तूमलर् तूवित्तॉळुदु
वायिनाल् पाडि मनत्तिनाल् चिंदिक्क
पोयपिऴैयुं पुहुदरुवान् निन्रनवुम्
तीयिनिल् तूशाहुम् शॅप्पेलो रॅम्पावाय् ॥

(६) पक्षी बोल रहे सभी चहचहा तार्क्ष्येश के सदन् के
आह्वानार्थ वळर्क्ष शंख रव को तूने सुना क्या नहीं,
जागो हे सखि! पूतना स्तन विषैला पी उसी को हना
तोडा है जिसने छली शकट को यों ही पदाघात से
भोगी–सेज पडे पयोधि पर की सोता जगत्कंद जो
सोने से पहले उसी परम को योगी निजी स्वांत में
रक्खे सोकर जागते 'हरि' कहे धीरे, उसी की ध्वनि
श्रोता के मन को प्रसन्न करती कन्याव्रती का कथन ॥

पुळ्ळुम् शिलंबिनकाण् पुळ्ळरैयन् कोयिल्
वॅळ्ळै विळिशंगिन पेररवम् केट्टिलैयो
पिळ्ळाय् ऍळुंदिराय् पेय्मुलै नंजुंडु
कळ्ळच् चकडम् कलक्कळिय कालोच्चि
वॅळ्ळत्तरविल् तुयिलमर्न्द वित्तिनै
उळ्ळत्तुक् कॉण्डु मुनिवर्कळुम् योगिकळुम्
मॅळ्ळ वॅळुंदु अरि ऍन्र पेररवम्
उळ्ळम् पुहुन्दु कुळिर्न्देलो रॅम्पावाय् ॥

(७) भारद्वाज शकुंत हैं कर रहे अन्योन्य जो कीचकीच
तूने क्या न सुना अहह् भूताविष्ट–सी खो गयी
माँगल्यांकन भूष से 'खन्खनी' आराव देते हुए
आमोदी मृदु केश की व्रजवधू के मंथने से दही
का निर्घोष बड़ा उठा अब पड़ा तेरे नहीं कान में?
नेत्री हो दल की, व्रज–प्रिय सखा नारायणाकार का
केशी का वध आदि–वर्णन सुना तो भी पडी सो रही!
खोलो द्वार प्रभावशालिनि अरी! कन्याव्रती का कथन ॥

कीशुकीशॅत्रॅङ्गुम् आनैच्चात्तन् कलंदु
पेशिन पेच्चरवम् केट्टिलैयो पेय्पॅण्णे
काशुम् पिरप्पुम् कलकलप्प क्कैपेर्त्तु
वाशनरुंगुऴ लाय्च्चियर् मत्तिनाल्
ओशैपडुत्त तयिररवं केट्टिलैयो
नायकप् पॅण्पिऴ्ळाय् नारायणन् मूर्ति
केशवनैप् पाडवुम् नी केट्टे किडत्तियो
तेशमुडैयाय् तिरवेलो रॅम्पावाय् ॥

(८) श्वेत प्राच्यदिगंत घास चरने नीहार–भीगी नयी
भैंसें दौड रहीं, सिवाय तुमको सारा–सखी–वृंद जो
जाने उत्सुक हो रहा उन सभी को रोक रक्खे हुए
तुम्हारे 'प्रतिबोध' हेतु अब तो आके बुलाती खड़ीं
जागो कौतुकशालिनी हय बने केशी सुराराति का
चीरा वक्त्र, हना सलील जिसने चाणूर मल्लादि को
देवाधीश्वर की सभक्ति चलके आराधना जो करें
देंगे भद्र सभी दयार्द्र बनके कन्याव्रती का कथन ॥

कीऴवानम् वॅळ्ळॅन्ऱॅरुमै शिरुवीडु
मेय्वान्परन्दनकाण् मिक्कुळ्ळ पिळ्ळैहळुम्
पोवान् पोकिन्ऱारैप् पोकामल् कात्तुन्नै
कूवुवान् वंदुनिन्ऱों कोदुकलमुडैय
पावाय् ऍऴुन्दिराय् पाडिपरैकॉण्डु
मावाय् पिळंदानै मल्लरै माट्टिय
देवादि देवनैच्चॅन्ऱु, नाम् शेवित्ताल
आवा वॅन्ऱारायन्दु अरुळेलो रॅम्पावाय् ॥

(९) मोतीरत्न–जडे हुए महल में दीप–प्रभा–बीच में
धूपों से शुभगंधि सेज पड़के आराम से सो रही
चाचा की प्रिय पुत्रि फाटक मणी–मोती–जडा खोल दो
चाचीजी प्रिय पुत्रि को अब जगाएँगी नहीं आप भी ?
गूंगी या बहरी न तो सुध गँवा सोती सुता आपकी
या तो मंत्रित शक्ति की अभिहता विस्मारिता आप को ?
अत्यंताद्भुत दिव्य चेष्टित विभो–वैकुंठ हे माधव,
इत्यादि प्रभु–नाम कीर्तन करें कन्याव्रती का कथन ॥

तूमणि माडत्तु च्चुट्टं विळक्कॅरिय
दूपं कमऴ़ त्तुयिलणै मेल् कण्वळरुं
मामान् मगले मणिक् कदवम् ताळ् तिरवाय्
मामीरवळै ऍऴुप्पीरो उन् मगळ् दान्
ऊमैयो अन्रि च्चॅविडो अनंदलो
एमप्पॅरंदुयिल् मंदिरप्पट्टालो
मामायन् मादवन् वैकुंद नॅन्रॅन्रु
नामं पलवुं नविन्रेलो रॅम्वाय् ॥

(१०) कन्या के व्रत से मिला फल अभी यों सो रही भामिनी-
खोला नाहिं सही किवाड़, अब भी दोगी नहीं क्या
जवाब ?
आमोदी तुलसी शिखा पर धरे, लक्ष्मीश की कीर्ति को
जो गावें उनको अभीप्सित वही देगा दयावान हो
जो था स्वप्निल कुं..कर्ण यम के लाई बना मुँह की
मानों हार स्वकीय नींद तुमसे लंबी तुझे दे चुका
सोने में सुध खो निमग्न व्रज की कन्या समाज-प्रधान !
आके खोल अभी प्रसन्न मन हो कन्याव्रती का
कथन ॥

नोट्रु च्चुवर्कम् पुहुकिन्न वम्मनाय्
माट्रमुं तारारो वाशल् तिरवादार्
नाट्रत्तुऴाय् मुडि नारायणन् नम्माल्
पोट्रप्परै तरुं पुण्णियनाल् पंडॉरुनाळ्
कूट्रत्तिन्वाय् वीऴन्द कुंबकरणनुम्
तोट्रुमुनक्के पॅरुंदुयिलदान् तंदानो
आट्रवनंदलुडैयाय् अरुंगलमे
तेट्रमाय् वंदु तिरवेलो रॅम्पावाय् ॥

(११) संख्यातीत सवत्स धेनु दुहते ग्रामीण–से दीखते
आये शत्रु उन्हें पराजित करें तत्काल तो वीर-से
तो भी दंभ–विहीन मुग्ध यदु की हैमी लता–सी सखी
भोगी के फन–से कटिस्थल्-लसी पिंछी-समा चाल में
सारे बंधु समाज के सखिजनों का वृंद भी आ गया
तेरे आंगन में जमा स्तवन भी गाता घनश्याम का
तो भी ना चलती न बात करती कान्हा–प्रिये हे सखि
सोने का पुरुषार्थ जान न सकीं कन्याव्रती का
कथन ॥

कट्रक्करवै कणंगळ् पल करंदु
शॅट्रार् तिरलऴिय च्चॅन्नुशॅरुच्चॅय्युम्
कुट्र मॉन्रिल्लाद कोवलर्तंपॉर्कॉडिये
पुट्रर वल्कुल् पुनमयिले पोदराय्
शुट्रत्तु त्तोऴिमा रॅल्लारुम् वंदुनिन्
मुट्रं पुहुंदु मुहिल्वण्णन् पेर् पाड
शिट्रादे पेशादे शॅल्वप्पॅण्डाट्टि नी
ऍट्रुक् कुरंगुं पोरुळेलो रॅम्पावाय् ॥

(१२) सद्योजात निरीह वत्स पर के वात्सल्य से मोहिता
भैंसों के थन से स्रवंत पय की धारा–भिगोयी जहाँ
शाला पंकिल हो, महाधनिक की ऐसे स्वसा लाडली
पाले का पडना अनादर किये तेरी डियोढी खडीं
लंका के नृप जो सलील जिससे मारा गया रोष से
गावें सर्वमनोभिराम उसको, तू मुँह न खोलती!
जागो आलि अभी सही यह लगी क्या नींद गाढी तुझे!
सारे यादव जान जायें, हमको कन्याव्रती का कथन ॥

कनैत्तिळंकट्रॅरुमै कन्नुक्किरंगि
निनैत्तुमुलैवऴ़िये निन्नु पाल्शोर
ननैत्तिल्लं शेराक्कुं नर्चॅलवन् तंगाय्
पनित्तलैवीऴ़ निन् वाशल् कडै पट्रि
शिनत्तिनाल् तॅन्निलंगैक् कोमानैच्चॅट्र
मनत्तुक्किनियानै प्पाडवुं नी वाय्तिरवाय्
इनित्ता नॅऴुंदिराय् ईदॅन्न पेरुरक्कं
अनैत्तिल्लत्तारुं अरिन्देलो रॅम्पावाय् ॥

(१३) चीरा था जिसने बकारि मुख को, दुर्वृत्त लंकेश के
शीर्षों को कटवा दिया विशिख से सत्यव्रती राम की
गाते कीर्ति–कथा सखी–गण गया निर्दिष्ट मैदान में
व्योम–प्रांगण शुक्र हैं चढ गये, डूबे सुराचार्य भी
पंछी बोल उठे, सरोज–दल पै षटपाद–सी लोचने
सर्दी में डुबकी लगा ठिठुरती प्रातः नहाये बिना
शय्या लेट रही सुपर्व–दिन में भाता मुझे ठीक क्या?
छोडो छद्‌म मिलो सहेलि–गण से कन्याव्रती का
कथन ॥

पुळ्ळिन् वाय् कींडानै पूपॉल्लावरक्कनै
किळ्ळि क्कळैंदानै क्कीर्तिमै पाडिप्पोय्
पिळ्ळै कळॅल्लारुं पावैक्कळम् पुक्कार्
वेळ्ळि ऍळुंदु वियाळमुरंगिट्रु
पुळ्ळुम् शिलंबिनकाण् पोदरिक्कण्णिनाय्
कुळ्ळ क्कुळिर क्कुडैंदु नीराडादे
पळ्ळि क्किडत्तियो पावाय् नी नन्नाळाल्
कळ्ळं तविर्न्दु कलन्देलो रॅम्पावाय् ॥

(१४) तेरे निष्कुट में लगी भवन के पीछे रही वापी में
ये कल्हार अभी लगे विकसने नीलाब्ज भी मीचने-
योगी ईंट सरंग वस्त्र पहने श्वेताब्ज-से दाँत के
नैजी मंदिर देव-पूजन-कृते श्रध्दा-भरे जा रहे
आके मैं स्वयमेव आप सबको दूँगी जगा, बोलती
निस्संकोच, उठो निरर्थ बचने, बागवीर कन्ये, तुरंत
गायेंगी निज दीर्घ बाहु धरते श्री शंख चक्र प्रभु
अंबोजाभ विशाल नेत्र हरिको, कन्याव्रती का कथन ॥

उंगळ् पुळक्कडै त्तोट्टत्तु वावियुळ्
शॅङ्गळुनीर् वाय् नॅहिळ्न्दु आंबल् वाय्
कूंबिनकाण्
शॅङ्गर् पॉडिक्कूरै वॅण्पल् तवत्तवर्
तंगळ् तिरुक्कोयिल् शंगिडुवान् पोकिन्नार
ऍङ्गळै मुन्नं ऍळुप्पुवान् वाय् पेशुम्
नंगाय् ऍळुंदिराय् नाणादाय् नावुडैयाय्
शँगॉडु शक्करं एँदुं तडक्कैयन्
पंगयक्कण्णानै प्पाडेलो रॅम्पावाय् ॥

(१५) तोती के सम अच्छवाणि सखि हे सोती रही हो अभी
चिल्लाओ नहीं बार-बार सखियो, आती रही हूँ अभी
आहा, वाह, अरी वचोनिपुणता तेरी हमें क्या नयी
जाना आप सबी समर्थ जन हैं, मैं ही समर्था सही
आओ शीघ्र अभी यहाँ धर रखा क्या और पुण्यार्थ है
आयीं और सहेलियाँ? जम गयीं, आके स्वयं ही गिनो
हाथी को जिसने हना, रिपु जनों का दंभ तोडा, उसी
मायामानुष को भजें सतत ही कन्याव्रती का कथन ॥

एल्ले इळंकिळिये इन्नुमुरंगुदियो
शिल्लॅन्रळै येन्मिन् नंगैमीर् पोदरुकिन्रेन्
वल्लैयुन् कट्टुरैहळ् पंडेयुन्वायरिदुम्
वल्लीर्हळ् नींगळे नानेदानायिडुह
ऑल्लै नी पोदाय् उनक्कॅन्न वेरुडैयै
ऍल्लारुं पोंदारो पोंदार् पोंदॅण्णिक्कॉळ्
वल्लानै कॉन्रानै माट्रानै माट्रळिक्क
वल्लानै मायनै प्पाडेलो रॅम्पावाय् ॥

(१६) गोपों के पति नंदगोप नृप के आगर के पालको
चीनी नव्य सुचेल का फहरता झंडा-सुशोभी महा-
ड्योढी-रक्षक रत्न और मणियों के द्वार को खोल दो
गोपी-वंश जनी अबोध हृदया कन्या जनों के लिये,
मायी ने मणि-वर्ण वांछित हमें देने कहा पूर्व ही
आयीं पावन हो प्रबोधन-कृते गाने प्रबोध-स्तुति
स्वामी आप हमें अभी प्रथम ही वाचा नहीं ना कहें
खोलें फाटक आप हृष्ट मन हो कन्याव्रती का कथन ॥

नायकनाय् निन्र नंदगोपनुडैय
कोयिल् काप्पाने कॉडित्तोन्रुं तोरण
वायिल् काप्पाने मणिक्कदवं ताळ् तिरवाय्
आयर् शिरुमियरो मुक्कु अरै परै
मायन् मणिवंण्णन् नॅन्नले वाय्नेर्न्दान्
तूयोमाय् वंदोम् तुयिलॅऴ प्पाडुवान्
वायाल् मुन्न मुन्नम् माट्रादे यम्मा नी
नेयनिलैक्कदवं नीक्केलो रॅम्पावाय् ॥

(१७) दाता निर्धन नाथहीन जन को खाना तथा वस्त्र का
सारे गोकुलवासि गोपजन के जागें प्रभो नंदजी
गोपस्त्री-कुल-दीपिका व्रतति-सी तन्वी वधू शोभना
रानीजी हम गोपजाति जन की जागें यशोदा मई
ऊँचे हो झट नापके भुवन को देते सुराधीश को
देवों के प्रभु देव, लोचन कृपा से खोल दें आप भी
हेमांभोज-समान लाल पद के श्रीमान सीरायुधी
भाई के सह आप नींद तज दें कन्याव्रती का
कथन ॥

अंबरमे तण्णीरे शोरे अरंचॅय्युं
ऍम्पॅरुमान् नंदगोपाला ऍलुंदिराय्
कॉम्बनार्कॅल्लाम् कॉलुंदे कुलविलक्के
ऍम्पॅरुमाट्टि यशोदाय् अरिवुराय्
अंबरमूडरु त्तोंगि उलहळंद
उंबर कोमाने उरंगादॅलुंदिराय्
शॅबोर्कळलडि च्चॅल्वा बलदेवा
उंबियुं नीयुं उरंगेलो रॅम्पावाय् ॥

(१८) हाथी-सा मद-मस्त घोर रण में जो ना कभी हारता
'नप्पिन्ना'भिध नंद गोप नृप की सत्ये, बहू वत्सले
नित्यामोदि शिरोरुहे करुणया खोलें गृह-द्वार को
वीथी में मुरगे कई निनद 'कुक्डूँ कूँ' बनाने लगे
वल्ली-मंटप कूजने पिक लगे, केळि प्रिये गेंद की
प्रेम-द्वंद-विवाद का रस चखें दाँपत्य में आपके
हाथों से मणि-कंकण-ध्वनि लगे अंभोज-लाली-भरे
खोलें आकर फ़ाटक प्रमुदिता कन्याव्रती का कथन ॥

उन्दुमदकळिट्रन् ओडाद तोळ्वलियन्
नंदगोपालन् मरुमहळे नप्पिन्नाय्
कंदम् कमळुम् कुऴली कडैतिरवाय्
वंदॅङ्गुम् कोऴि अऴैत्तनकाण् मादवि
प्पंदलूमेल् पल्काल् कुयिलिनंगळ् कूविनकाण्
पंदार् विरलि उन् मैत्तुनन् पेर पाड
शॅनूदामरै क्कैयाल् शीरार् वळैयॉलिप्प
वंदु तिरवाय् महिऴ्न्देलो रॅम्पावाय् ॥

(१९) पायेदार् दिया जले गज महादंतों बनी खाट् की
मृदवी सेमर रुइ की मखमली संमोहिनी सेज पर
फूलों से अतिवासि-केश-भरिता सत्या प्रिया के कुच-
द्वदों को सुविशाल वक्ष पर ही धारे कहें तो तनिक
नीलाब्जाभ, विशाल् काजल-लगी नेत्रे निज प्रेमि को
कैसी भी स्थिति् में सही, स्वपन से देंगी नहीं जागने
थोडे भी क्षण को वियोग उनका तुमहें नहीं जंचता
तेरे स्थान, स्यभाव को उचित ना कन्याव्रती का
कथन ॥

कुत्तुविळ क्कॅरिय क्कोट्टुक्काल् कट्टिल्मेल्
मॅत्तॅन्न पंचशयनत्तिन् मेलेरि
कॉत्तलर् पूँगुळल् नप्पिन्नै कॉङ्गैमेल्
वैत्तुक् किडंद मलर् मार्बा वाय्तिरवाय्
मैत्तडंकण्णिनाय् नीयुन् मणाळनै
ऍत्तनै पोदुं तुयिलॅळ वॉट्टाय्काण्
ऍत्तनैयेलुम् पिरिवाट्र किल्लायाल्
तत्तुवमन्नु तहवेलो रॅम्पावाय् ॥

(२०) तैंतीसों सुर को विषाद लगता कोई कभी, आप जा
वैरी का करते विनाशन बली जागें प्रभो नींद से
त्राता आश्रित का सदा, चतुर हे रक्षा क्रिया में महा
कंपाते अरि सैन्य को विमल हे, खोलें अभी अँखियाँ
निंबोष्ठी कलश-स्तनी बहुत ही तन्वी कटि-स्थान में
सत्या नामक अंगने जलधिजा रूपे जगें नींद से
पंखा, चांवर, आइना, पटह दें प्राणाश को आपने
कन्या का व्रत आज ही सफल हो कन्याव्रती का
कथन ॥

मुप्पत्तुतु मूवर अमरर्कु मुन् शॅन्नु
कप्पं तविर्कुम् कलिये तुयिलॅऴाय्
शॅप्पमुडैयाय् तिरलुडैयाय् शॅट्रार्कु
वॅप्पं कॉडुक्कुं विमला तुयिलॅऴाय्
शॅप्पॅन्न मॅन्मुलै च्वॅव्वाय् शिरुमरुंगुल्
नप्पिन्नै नंगाय् तिरुवे तुयिलॅऴाय्
उक्कमुं तट्टॉळियुम् तंदुन् मणाळनै
इप्पोदे एम्मै नीराट्टेलो रॅम्पावाय् ॥

(२१) हाँडी में दुहते उभाड़ पड़ती धारा सदा दूध की
हाँडी बाहर, दूध दे सहज ही ऐसी कई धेनुओं
के स्वामी यदुराज के तनुज हे जागें कृपा से अभी
वेदों से प्रतिपादित स्वमहिमावाले अनिर्वाच्य हे
प्रत्यक्षी कृत मूर्ति सर्व नर से, तेजस्वरूपि जगें
खोके वीर्य समस्त गर्व अपने विद्वेषि लाचार ज्यों
आ तेरे नलिनाभ पाद पर ज्यों प्रार्थी बडे क्षेम का
आ तेरा यश-गान गा हम रहीं कन्याव्रती का
कथन ॥

एट्र कलंगळ् ऍदिरपॉगि मीदळिप्प
माट्रादे पाल्शॉरियुं वळ्ळल् पॅरुंपशुक्कळ्
आट्रपडैत्तान् मकने अरिवुराय्
ऊट्रमुडयाय् पॅरियाय् उलकिनिल्
तोट्रमाय् निन्र शुडरे तुयिलेळाय्
माट्रारुनक्कु वलि तुलैन्दुन् वाशर्कण्
आट्रादु वंदुन् अडि पणियुमाप्पोले
पोट्रियां वंदोम् पुकऴ्न्देलो रॅम्पावाय् ॥

(२२) राजालोग विशाल भूमि तल के खोके घमंड स्वयं
श्री सिंहासन-सम्मुख क्षिति पडे कारुण्य-कांक्षी यथा
आके भक्तिन संघ हो हम कृपा-कांक्षी बनीं आपकी
धीरे से कमनीय हो विकसती जैसे कली पद्म की
तेरी दृष्टि-सरोज-ताम्र हम पै क्या ना पडेगी खुली ?
जैसे पूरब में अभी उदित हों आदित्य और चँद्रमा
कारुण्यामृत-पूर्ण नेत्र-युग की वीक्षा हमें प्राप्त तो
पापों के मिट जाय भार अपने कन्याव्रती का
कथन ॥

अंगण्मा ञाल त्तरशरभिमान
बंगमाय् वंदुनिन् पळिळक्कट्टिर्कीऴे
शंगमिरुप्पार् पोल् वंदुतलैप्पॅय्दोम्
किंकिणि वाय्चॅय्द तामरैपूप्पोले
शॅङ्गण शिरिच्चिरिदे ऍम्मेल् विऴियावो
तिङ्गळु मादित्तियनु मॅऴुंदार्प्पोल्
अंगणिरंडुम् कॉण्डॅङ्गळ्मेल् नोक्कुदियेल्
ऍङ्गळ्मेल् शाप मिऴिदेलो रॅम्पावाय् ॥

(२३) वर्षा में गिरि की गुहा-तल पडे सोये-युवासिंह ज्यों
निद्रा से प्रतिबुध्द हो ज्वलन-सी खोले निजी आँखियाँ
चारों ओर निजी सटा विकट को आवेग से धूनते
सीधा हो गरुआइ से गरजते प्रस्थान हो स्थान से
सीधे बाहर आ चले तडकते, तीसी यथा सांवले,
शया-मंदिर छोड आप अपना सीधे पधारें यहाँ
श्रीसिंहासन शिल्प-शोभि पर हो आरूढ, प्रार्थी हमें
पूरी मांग करें विचार कृपया कन्याग्रती का कथन ॥

मारिमलै मुळंजिल् मन्निक्किडंदुरंगुम्
शीरिय शिंग मरिवुट्ट त्तीविळित्तु
वेरि मयिर् पॉंग वॅप्पाडुं पेर्न्दुदरि
मूरि निमिर्न्दु मुळंगिप्पुरप्पट्टु
पोदरुमापोले नी पूवैप्पूवण्णा उन्
कोयिल् निन्रिंगने पोंदरुळि कोप्पुडैय
शीरिय शिंगासनत्तिरुंदु याम् वंद
कारिय मारायून्दु अरुळेलो रॅम्पावाय् ॥

(२४) पादों से जग नापते परम के पादाब्ज की जीत हो
लंका जा रिपु मेटते अतिरथी के शौर्य की जीत हो
गाडी-भंजक पाद से शिशु-दशा में कीर्ति की जीत हो
फेंका वत्स छडी बना पद अड़ा पादाब्ज की जीत हो
रक्षा की छतरी बना गिरि जनों की, स्नेह की जीत हो
वैरी को सकुटुंब नष्ट करती शक्त्यर-त्र की जीत हो
ऐसी अद्‌भुत आप की बहु कथाओं को सदा गा रही
आयीं आज करें अनुग्रह हमें कन्याव्रती का कथन ॥

अन्रि व्वुलकमळन्दाय् अडि पोट्रि
शेन्रंगु त्तेन्निलंगै शॅट्राय् तिरल् पोट्रि
पॉन्र च्चगड मुदैत्ताय् पुगऴ् पोट्रि
कन्रु कुणिला यॅरिंदाय् कऴल् पोट्रि
कुन्रु कुडैया यॅडुत्ताय् गुणं पोट्रि
वॅन्रुपकै कॅडुक्कुं निन्कैयिल् वेल्पोट्रि
ऍन्रॅन्रुन् शेवकमे एट्रिप्परै कॉऴ्वान्
इन्रु यां वंदोम् इरंगेलो रॅम्पावाय् ॥

(२५) लेके उद्भव एक के जठर से, जाके उसी रात्री में
गोदी में इक की छिपे पल रहे, ऐसे समाचार से
गुस्से से जड़ हो अनेक विध की हत्या-क्रिया में लगे
हत्यारे रिपु कंस के जतन को देते हुए व्यर्थता
वैरी के मन को दवानल यथा भीति-प्रदायी प्रभो
प्रार्थी हैं हम आश्रितार्थद हमारी मांग की पूर्ति हो
तो संपत्ति अनुत्तमा, जगत का ईशत्व, गावें सदा
पावें दुक्ख-विनाश औ मुदित हों कन्याव्रती का कथन ॥

ऑरुत्ति महनाय् पिरंदोरिरविल्
ऑरुत्ति महनायॉळित्तु वळर
तरिक्किला नाकित्तान् तींगु निनैंद
करुत्तै प्पिळैप्पित्तु कंजन् वयिट्रिनिल्
नॅरुप्पॅन्न नित्र नॅडुमाले उन्नै
अरुत्तित्तु वंदोम् परै तरुदियाकिल्
तिरुत्तक्क शॅल्वमुं शेवकमुं याम् पाडि
वरुत्तमुं तीर्न्दु मकिळ्ंन्देलो रॅम्पावाय्॥

(२६) मेघ-श्यामल ! कन्यका-व्रत चलाने के लिए जो लगे
बूढों ने इसके लिए कह रखा आवशयक द्रव्य यों
सारे-भूतल के भयंकर बडे निर्घोषवाले तथा
क्षीर-श्वेतिम पाँचजन्य सम के नाना बड़े शंख भी
दूरी से सुनते बड़े पटह के बाजे असंख्यात भी,
वंदी-बृंद अनेक हों भजन में प्रावीण्य पाये हुए
झंडे, मंगल दीप भी अनगिने, चंदोब भी हों कई
दे दें हे वट-पत्र-शायि ! कृपया कन्याव्रती का कथन ॥

माले मणिवण्णा मार्गऴि नीराडुवान्
मेलैयार् शॅय्वनकळ् वेंडुवन केट्टियेल्
आलत्तै यॅल्लां नडुंग मुरल्वन
पालन्न वण्णत्तुन् पाँज शन्नियमे
पोल्वन शंगंगळ् पोय्प्पाडुडैयनवे
शालप्पॅरुं परैये पल्लांडिशैप्पारे
कोल विळक्के कॉडिये विदानमे
आलिनिलैयाय् अरुळेलो रॅम्पावाय् ॥

(२७) ख्याति-प्राप्त पराक्रमी सहज ही गोविन्द ! हे माधव !
तेरे सद्‌गुण-गान से व्रत चरें तो ये पुरस्कार हों
सारा भारत मान जाय हमको सम्मानित प्रेम से
कानों कँवल्, कर्णफूल चमके, हाथों रहे कंगना
चाँदी भूषण पैर में सकल यों भूषा धरें, पूर्व में
साड़ी उत्तम रेशमी पहन लें पश्चात् क्षीरान्न हो
जैसे अन्न दिखे न घी तिर रहे, हाथों उठाते बहे
खायेंगी सब -एक साथ मिलके कन्याव्रती का कथन ॥

कूडारै वॅल्लुम् शीर गोविन्दा ! उन्दन्नै
पाडिप्परै कॉण्डु याम् पॅरु शम्मानम्
नाडु पुकळ्ंु परिशिनाल् नन्नाक
शूडकमे तोळ्वळैये तोडे शॅविप्पूवे
पाडकमे ऍन्ननैयप् पल्कलनुं यामणिवोम्
आडैयुडुप्पोमदन् पिन्ने पार्चोरु
मुड नॅय् पॅय्दु मुळ्ंगै वऴिवार
कूडियिरुन्दु कुळिन्र्दैलो रॅम्पावाय् ॥

(२८) पीछे धेनु-समूह के विपिन में जा एक हो खा रहे
ज्ञानाचार-विहीन गोप-कुल की हैं, साथ ही भाग्य है
ले औतार समान-जातिक किया देवेशने गोप को
हे गोविन्द अशेष-दोष-रहित स्वामी तुम्हारा यहाँ
गोपों के सह बंधुता अब कभी तोडा नहीं जा सके
अज्ञानी हम सर्वथा यदु-ज कन्याएँ, कभी प्रेम से
ज्ञाना-भाव-पडे अनादर हुआ तो क्रोध ना ही करें
स्वामी! वांछित-पूर्ति दें करुणया कन्याव्रती का कथन ॥

करवैकळ् पिन् शॅन्नु कानं शेर्न्दुण्बोम्
अरिवॉन्नु मिल्लाद आय्क् कुलतुन्रन्नै
पिरवि पॅरुंदन्नै पुण्णियं यामुडैयोम्
कुरै यॉन्नु मिल्लाद गोविन्दा उन्रन्नोडु
उरवेल् नमक्किं गॉऴिक्क ऑऴियादु
अरियाद पिळ्ळैकळोम् अन्बिनालुन्रन्नै
शिरुपेरऴैत्तनवुम् शीरियरुळादे
इरैवा नी ताराय् परैयेलो रॅम्पावाय् ॥

(२९) तेरे दर्शन के लिए हम उठी आयीं, बडे मोर ही
आके स्वर्णिम पाद पद्म भजने का अर्थ है यों प्रभो
गो-रक्षा कर जी रहे यदुजनों में जन्म लेके हमें
अपने दास किये बिना अब तुम्हें चारा नहीं और है
बाजा केवल आज लें, यह नहीं इच्छा हमारी रही
भावी किन्तु अनंतकाल जनियों में भी तुम्हारी रहें
तेरे प्रेय रहें सदा, सतत् ही हो आपकी दासता
इच्छाएँ सब अन्य नाश कर दें कन्याव्रती का कथन ॥

शिट्रंजिरु काले वंदुन्नैच् चेवित्तुन्
पॉट्रामरैयडिये पोट्रुं पॉरुळ् केळाय्
पॅट्रं मेयृत्तुण्णुं कुलत्तिल् पिरंदु नी
कुट्रेवल् एङ्गळैक् कॉळ्ळामल् पोकादु
इट्रैप्परै कॉळवा नन्नुकाण् गोविन्दा
ऍट्रैक्कु मेऴेळु पिरविक्कुमुन्रन्नोडु
उट्रोमे यावो मुनक्के नामाट्शॅय्वोम्
मट्रै नंकामंगळ् माट्रेलो रॅम्पावाय् ॥

(३०) केशीमर्दन दुग्ध-सिन्धु मथनेवाले रमानाथ से
जाके चँद्रमुखी सुरूप अबलाओं ने यथा माँग के
पायी थी निज कामना, इस कथा की विल्लिपुत्तूर के
अक्षांभोरुह-हार धारण किये विप्राग्रणी की सुता
गोदा से कृत संघ की तमिऴ की पद्यावली तीस को
गायें भक्ति-वशी यथा-क्रम महाविश्वास के साथ जो
अंभोजाक्ष चतुर्भुज प्रभु, रमाप्रेमी दया से वही
पाके सौख्य समस्त भी मुदित हो कनयाव्रती का
कथन ॥

वंगक्कडल् कडैंद मादवनैक् केशवनै
तिंगळ् तिरुमुहत्तु च्चेयिऴैयार् शॅन्रिरैंजि
अंगप्परै कॉण्ड वाट्रै यणिपुदुवै
पैंगमलत्तण् डॅरियल् पट्टर्पिरान्कोदै शॉन्न
शंगत्तमिऴ्मालै मुप्पदुम् तप्पामे
इंगिप्परिशुरैप्पार् ईरिरण्डु माल् वरैत्तोळ्
शॅङ्गण् तिरुमुहत्तु च्चॅल्वत् तिरुमालाल्
ऍङ्गुं तिरुवरुळ् पॅद्रिन्बुरुव रॅम्पावाय्॥

श्रीः

तिरुप्पळ्ळि ऍळुच्चि

(प्राबोधिक स्तुति)

मूल(तमिऴ) रचयिता:

तॉण्डरड़िप्पॉडि आऴ्वार

(भक्तांघ्रिरेणु)

हिंदी पद्यरूपांतरण रचयिता :

"अबोध मद्रासी"

॥ श्री कू. श्री. राघवाचार्य ॥



श्री तॉण्डरडिप्पॉडि आऴ्वार
(भक्तांघ्रिरेणु)
तिरुमण्डङ्गुडि, तमिलनाडु

(१) सूर्य प्राच्य दिगंत अद्रि थलपै भासे भरा राजता
अंधेरा छटके चला सुनहरा आया उषःकाल है
नानारूप सुगंधि पुष्प मधु की बूँदें चुवाने लगे
स्वर्गीय प्रभु मानव प्रभु जनों का बृंद आ के खड़ा
ड्योढ़ी के अब सामने उन सभी के साथ आये यहाँ
हाथी और करेणु की मुरज की चिंघाड के घोष से
घोषाडंबर सागरी लहर का सा घोष चारों दिशा
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

कदिरवन् कुणदिशैच्चिकरं वन्दणैन्दान्
कन इरुळकन्नदु कालै यंपॉळुदाय्
मधुविरिन्दॉळिकिन मामलरॅल्लाम्
वानव ररशर्कळ् वन्दुवन्दीण्डि
ऍदिर्तिशै निरैन्दन रिवरॉडुम् पुकुन्द
इरुंगळिट्रीट्टमुं पिडियॉडु मुरशुम्
अदिर्तलिललैकडल् पोन्रुळदॅङ्गुम्
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये ॥

(२) नाना वीरुध के प्रसून कुल के आश्लेष से गंधवान
आया सेवन के लिए मरुत भी प्राची दिशा से यहाँ
पुष्पों के शुभगंधि सेज पर ही सोये हुए हंस भी
पक्षों को निज धूनते तुहिन से भीगे अभी हैं उठे
भीकारी बिल-से महामगर के श्वेती-भरे दांत के
सूची अग्र समान तीव्र चुभने से ही बने घाव के
आघाती विष से सुपीडित करी के दुःख-संहारक
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

कॉळुङ्गॉडि मुल्लैयिन् कॉळुमलरणवि
कून्र्दु कुणदिशै मारुदमिदुवो
ऍळुन्दन मलरणैप्पळ्ळिकॉळ्ळन्नम्
ईन्पनि ननैन्द तमिरुञ्चिरकुदरि
विळुङ्गिय मुदलैयिन् पिलम्पुरै पेळ्वाय्
वॅळ्ळॅयिरुर वदन् विडत्तिनु क्कनुङ्गि
अळुङ्गिय वानयि नरुन्दुयर् कॅडुत्त
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये ॥

(३) चारों ओर दिनेश के किरण हैं फैले अभी दीखते
व्योम-प्रांगण तारका-गण गये तेजो-विहीन स्वयम
नीहार-प्रभ चंद्रमा यह अभी पीला पड़ा दीखता
अंधेरा अब फैलता छँट गया वाटी-लसे पूग के
वृक्षों की नव चीर्ण गुच्छ-परतों की गंध से पूरिता
प्रातःकालिक वायु शीत मृदुला धीरे चली आ रही
ओजस्वी अति उग्र भी प्रसरते चक्रेश को धारते
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

शुडरॉलि परन्दन शूऴ्दिशै ऍल्लाम्
तुन्निय तारकै मिन्नॉऴि शुरुङ्गि
पडरॉऴि घशुत्तनन् पनिमदि यिवनो
पायिरु ळकन्नदु पैंपॉऴिऱ् कमुहिन्
मडलिडै क्कीरि वण् पाळैकळ् नार
वैकरै कूर्न्ददु मारुद मिदुवो
अडरॉलि तिकऴ्तरु तिकिरियं तटक्कै
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि एऴुन्दरुळाये ॥

(४) भैंसों उत्तम जाति की तरुण की रस्सी छुडाते अहीर
के लोगों की मुरली तथा वृषभ के संघात की घंटियों
का संमिश्र निनाद है सब दिशाओं में सुना जा रहा
खेतों में मधुकारि-संघ फिरते रींकार आमोद से
लंका के निशिचारि-संघ दलते देवेश शार्ङ्ग-प्रभु
पाला गाधिज-यज्ञ को अवभृथ-स्नायी बनाया उन्हें
ऐसे दुर्जय एकवीर नगरी साकेत के भूपते
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

मेट्टिळ मेदिकळ् तळैविडु मायर्कळ्
वेय्ङ्कुळलोशैयुं विडैमणिक्कुरलुम्
ईट्टिय विशै दिशै परन्दन वयलुळ्
इरिन्दन शुरुम्बिन मिलङ्गैयर् कुलत्तै
वाट्टिय वरिशिलै वानवरेरे मामुनि
वेळ्वियै क्कात्तवबिरदम्
आट्टिय वडुतिरलयोत्ति एॅम्मरशे
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि एॅळुन्दरुळाये ॥

(५) पंछी यें सुम-वाटिका-गत अनेकों कूजने हैं लगे
अंधेरा छँटता रहा सुनहरी ऊषा चली आ रही
तुंगोत्तुंग तरंग घोष सुनता वंगी महांभोधि का
भौरों के मधु-दृप्त झंकृति-मिले नाना सुमों से स्वयं
नानारंग-विचित्र माल्य कर में सेवार्थ देवेश की
धारे निर्जर सामने भवन के स्वामी खडे आपके
लंका के शुभधी विभीषण जनाधीशान से पूजित
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

पुलंबिन पुट्कळुम् पूंपॉऴिल्कळिन् वाय्
पोयिट्रु क्कङ्गुल् पुहुन्ददु पुलरि
कलंददु कुणदिशै क्कनैकडलरवं
कळिवण्डु मिऴ्ट्रिय कलंबकं पुनैन्द
अलङ्गलन् तॉडयल् कॉण्डडियिनै पणिवान्
अमरर्गळ् पुहुन्दन रादलिलम्मा
इलङ्गैयर्कोन वऴिपाडुशॅय् कोयिल्
एम्पॅरुमान् ,पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये ॥

(६) ये हैं बारह सूर्य नैज रथ से सप्ताश्व के साथ के
ये हैं ग्यारह ईश रुद्र निज के नंदी वृषेशान से
ये हैं षण्मुख मोर-वाहन-लसे सेनेश देवेश के
आठों हैं वसु सात मारुत खडे अन्योन्य धक्का लगा
घोडे स्यंदन नृत्य गायन तथा चिंघाड़ हेषा मिली
देवों के सह आ-रही बहु चमू-संघात निर्घोष भी
तेरे मंदिर के समक्ष शिखरी-से दर्शनार्थी लगे
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

इरवियर् मणि नॅडुन् तेरॉडु मिवरो
इरैयवर् पदिनॉरु विडैयरु मिवरो
मरुविय मयिलिन नरुमुक निवनो
मरुदरुं वशुक्कळुं वन्दुवन्दीण्डि
पुरवियो डाडलुं पाडलुं तेरुं
कुमरदण्डं पुहुन्दीण्डिय वॅळ्ळं
अरुवरैयनैय निन् कोयिल् मुन्निवरो
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये ॥

(७) सारे निर्जर अंतरिक्ष-भर में सेवार्थ आये खड़े
सातों मारुत, मर्त्य, देव मुनियों के संघ भी आ-खडे
सुत्रामा सह आ खडा निज करी ऐरावताभिख्य के
तेरे आलय के समक्ष जग के हे आदिमूल प्रभो
विघ्याधारि तथैव किन्नर महागंधर्व अन्योन्य के
धक्के में पद-सेवि यक्ष पड़ते निश्चेत, ऐसा यहाँ
थोडा भी अवकाश भूतल तथा आकाश में ना रहा
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

अंदरत्तमरर्कळ् कूट्टङ्गळिवैयो
अरुन्दव मुनिवरुं मरुदरुमिवरो
इन्दिरनानैयुं तानुं वन्दिवनो
ऎम्पॆरुमानुन कोयिलिन् वाशल्
सुन्दरर् नॆरुक्क विच्चादरर् नूक्क
इयक्करुं मयङ्गिनर् तिरुवडि तॊऴुवान्
अंदरं पारिडमिल्लै मट्रिदुवो
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि ऎऴुन्दरुळाये ॥

(८) ताजा दूब सुगंधि धेनु कपिला को आइना भा-भरा
दोनों उत्तम पद्म, शंख निधियाँ श्रद्धोपहारार्थ ले
स्वामी के शुभ-दर्शनार्थ पहला मांगल्य वस्तू अमर
प्रातदर्शन के सुयोग्य विविध प्रख्यात वस्तू सभी
योगी तुंबुरु नारद प्रभृति ये हाथों लिए भक्ति से
सूर्य स्वीय प्रचंड रूप कर-को उध्यंत फैला रहा
अंधेरा अब अंतरिक्ष-तल से भी से छँटा जा रहा
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

वम्बविऴ् वानवर् वायुरै वऴङ्ग
मानिदि कपिलै यॉण कण्णाडि मुदला
ऍम्पॅरुमान् पडिमैक्कलम् कॉण्डर्क्कु
एर्प्पन वायिन कॉण्डु नन् मुनिवर्
तुम्बुरु नारदर् पुकुन्दन रिवरो
तोन्रिन निरवियुम् तुळङ्गोळि परप्पि
अम्बरतलत्तिल् निन्रु अकल्किन्र दिरुळ्पोय्
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये ॥

(९) वीणा वाद्य मृदंग वंशि पटही मंद्रारव-स्वंचिता
तान्पूरा प्रभृति स्वनंत बहुधा बाजा-रवों के सह
गाते गायन यक्ष किन्नर तथा गंधर्व विद्याधरी
सारे देवज गारुड़ प्रभृति हैं उत्साह से रात्रि-भर
तेरे दर्शक-संघ में चल रहे अन्योन्य संमर्द से
स्वर्वासी, मुनि, सिद्ध चारण तथा यक्षादि भी हैं अचेत
देने दर्शन सर्व भक्त-गण को गोष्ठी लगे आज की
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

एदमिल् तण्णुमै ऍक्कं मत्तळि
याळ्कुळल् मुळवमोडिशै दिशै कॅळुमि
कीदङ्गळ् पाडिनर् किन्नरर् करुडर्कळ्
कॅन्दरुवरिवर् कंगुलु मॅल्लां
मादवर् वानवर् शारणरियक्कर्
चित्तरुं मयङ्गिनर् तिरुवडित्तॉळुवान्
आदलि लवर्क्कु नाळोलक्कमरुळ
अरङ्गत्तम्मा पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये ॥

(१०) नैनी पंखुडियाँ जलेरुह सुगंधी खोलती हैं अभी
अम्भांतारव प्राच्य अंबुनिधि से आदित्य उध्यंत है
साडी धार निचोड केश, तनु-मध्याएँ चढीं तीर-पर
कावेरी वलयांक रंगनगरी भूपाल हे रंगराट
आमोदी तुलसी पिरोकर धरी डोली धरे स्कंध पर
भक्तों की पद-रेणु नामक सदा त्वद्दास्य-भोगी मुझे
कारुण्योचित पात्र मान मुझको भक्तांघ्रि-सेवी करो
श्रीरंगेश्वर हे प्रभो करुणया सुस्वाप से जाग लें ॥

कडिमलर् क्कमलङ्गळ् मलर्न्दन यिवैयो
कदिरवन् कनैकडल् मुळैत्तन निवनो
तुडियिडैयार् सुरिकुऴल् पिळिन्दुदरि
तुकिलुडुत्तेरिनर् सूळ्पुनलरङ्गा
तॉडैयॉत्त तुळवमुं कूडैयुं पॉलिन्दु
तोन्त्रिय तोळ् तॉण्डरडिप्पॉडियन्नुम्
अडियनै अळियनॅन्त्ररुळि युन्
अडियार्क्काट्पडुत्ताय् पळ्ळि ऍळुन्दरुळाये॥